आत्ममंथन – समय की पुकार

सागर सी लहरों में बहता, जीवन का ये कारवां,
कभी शांत, कभी उग्र, बस बहता निरंतर बेमिसाल,
हवा के झोंकों संग गुनगुनाती, तट से टकराती लहरें,
भँवरों में उलझी पीड़ा में भी, मौन रहते करें सवाल।

सागर गहराइयों में ही छिपा है रत्नों का अपार भंडार,
जहाँ विष और अमृत दोनों को अपनाया उसने हर बार,
अनजानी लहरें, तट टकराती तरंगें सुनाए जीवन ज्ञान,
जैसे सम्भावनाओं में छुपा, कोई अनकहा दर्शन विचार।

निःसंकोच समाये है सभी को बिना किसी भेदभाव के,
करें प्रमाणित विशालता अपनी, जीवन को दे मिसाल,
उतार-चढ़ाव हैं इसकी प्रकृति, यही जीवन चक्र का सार,
हर सुबह का सूरज दे, जोश-उत्साह से जीने का निर्देश।

नव आशाओं की दस्तक से, तरंगी उमंगें पुनः जाग उठें,
खुशियों भरे रंगों से सजाए जीवन के अधूरे कोरे कैनवस,
दुर्गम पथों पर लक्ष्य पहुंचाने का कराए विवेक पूर्ण चयन,
कुछ यादें लौटें या ना लौटें, फिर भी सिखा जाए अपनापन।

लक्ष्यों से न भटकना स्वयं से संघर्ष ही है, सबसे बड़ा रण,
दुर्लभ पथ हो कठिन सही, पर कुछ होता असंभव कभी नहीं,
नियति के खेल की समझ ही, तो खुद की पहचान दे कराए,
आत्मिक उन्नति के लिए आत्ममंथन होना, है अति आवश्यक।

करें प्रार्थना, अठखेलियाँ करती, उन लम्हों की तट वापसी,
जीवन मंथन में प्रयत्नशील रहने में छिपें है जटिल उपाय,
जीवन की गहराइयों से निकला अमृत ही है 'ईश्वरीय वरदान'
जब जागो तब सवेरा...यही प्रकृति नियम है यही जीवन सत्य।

गीतांजलि सक्सेना 2025